अति प्राचीन इतिहास

पाठ दो

स्वर्गलोक खोया और पाया

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2012 के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इन्टरनेशनल., पो. बॉक्स 300769, फर्न पार्क, फ्लोरिडा 32730-0769 से लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या छात्रवृत्ति के प्रयोजनों के लिए संक्षिप्त टिप्पणियों को छोड़कर किसी भी रूप में या लाभ प्राप्ति के लिए किसी भी तरह से पुन:उत्पादित नहीं किया जा सकता है।

यदि कहीं और नहीं बताया गया तो पवित्रशास्त्र की सभी टिप्पणियाँ हिन्दी की पवित्र बाइबिल से ली गई हैं। 1984 अंतर्राष्ट्रीय बाइबिल सोसायटी © सर्वाधिकार सुरक्षित। बाइबिल प्रकाशक की अनुमति के द्वारा प्रयुक्त किए गये हैं।

थर्ड मिलेनियम की मसीही सेवा के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम मसीही सेवकाई एक लाभनिरपेक्ष मसीही संस्था है जो कि **मुफ्त में**, **पूरी दुनिया के लिये**, **बाइबल पर आधारित शिक्षा** मुहैया कराने के लिये समर्पित है। उचित, बाइबल पर आधारित, मसीही अगुवों के प्रशिक्षण हेतु दुनिया भर में बढ़ती मांग के जवाब में, हम सेमीनरी पाठ्यक्रम को विकसित करते हैं एवं बाँटते हैं, यह मुख्यतः उन मसीही अगुवों के लिये होती है जिनके पास प्रशिक्षण साधनों तक पहुँच नहीं होती है। दान देने वालों के आधार पर, प्रयोग करने में आसानी, मल्टीमीडिया सेमीनरी पाठ्यक्रम का 5 भाषाओं (अंग्रेजी, स्पैनिश, रूसी, मनडारिन चीनी और अरबी) में विकास कर, थर्ड मिलेनियम ने कम खर्च पर दुनिया भर में मसीही पासबानों एवं अगुवों को प्रशिक्षण देने का तरीका विकसित किया है। सभी अध्याय हमारे द्वारा ही लिखित, रुप-रेखांकित एवं तैयार किये गये हैं, और शैली एवं गुणवत्ता में द हिस्ट्री चैनल © के समान हैं। सजीवता के प्रयोग एवं शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट चलचित्र उत्पादन के लिये थर्ड मिलेनियम 2 टैली पुरस्कार जीत चुका है, और हमारा पाठ्यक्रम 150 भी ज्यादा देशों में प्रयोग हो रहा है। हमारी सामग्री डी.वी.डी, छपाई, इंटरनेट, उपग्रह द्वारा टेलीविज़न प्रसारण, रेडियो, और टेलीविज़न प्रसार का रूप लेते हैं।

हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार से उसमें शामिल हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org. पर जाएँ।

विषय-वस्तु

I. प्रस्तावना 1

II. साहित्यिक संरचना 1

A. अवलोकन 2

1. वाटिका में 2
2. समृद्ध की गई परिस्थिति 2
3. शापित की गई परिस्थिति 3
4. वाटिका से बाहर 3

B. समरूपता 3

1. शुरुआत और समापन 4
2. बीच वाले भाग 5

III. वास्तविक अर्थ 6

A. वाटिका 6

1. पहचान 6
2. पवित्रता 8

B. वफादारी 11

1. अदन में 11
2. कनान में 12

C. परिणाम 13

1. मृत्यु 14
2. दर्द 15
3. निष्कासन 16

IV. आधुनिक अनुप्रयोग 17

A. उद्घाटन 18

1. पौलुस 18
2. मत्ती 19

B. निरंतरता 20

1. पौलुस 20
2. याकूब 21

C. परिपूर्णता 22

1. रोमियों 22
2. प्रकाशितवाक्य 22

V. निष्कर्ष 23

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

अति-प्राचीन इतिहास

पाठ दो

स्वर्गलोक खोया और पाया

प्रस्तावना

मेरे ख्याल से कभी न कभी हर एक व्यक्ति किसी न किसी चीज़ को खो देता है। शायद वह कोई पुस्तक हो। शायद वह आपके घर की चाबी हो। मैं आपके बारे में तो नहीं जानता, लेकिन जब भी मैं कोई ऐसी चीज़ खोता हूँ, तो, मैं जो पहला काम करता हूँ वह है, कि अपने कदमों पर पीछे वापस चलता हूँ। कम से कम अपने दिमाग में, यह याद करने के लिए कि मैंने जिस वस्तु को खोया है उसे कहाँ रखा है, मैं समय में पीछे कदम-ब-कदम जाता हूँ। फिर, एक बार जब मैंने अपने कदमों पर पीछे चल लिया होता है, तो जो गलती मैंने की थी उसे सावधानीपूर्वक उलटता हूँ। मैं चाबियों को मेज़ पर रखता हूँ जहाँ उन्हें होना चाहिए था, और पुस्तक वापस अलमारी में जाती है। मैं जानता हूँ कि मैंने जो किया था उस पर वापस पीछे जाना और उलट कर करना उस चीज़ को खोजने का सबसे अच्छा तरीका है जिसे मैंने खो दिया था।

अब, हमने इस पाठ का शीर्षक रखा है, "स्वर्गलोक खोया और पाया," और हम लोग अपना ध्यान उत्पत्ति 2:4-3:24 पर केंद्रित करेंगे, जो कि अदन की वाटिका में आदम और हव्वा के पाप की कहानी है। हम देखेंगे कि मूसा ने आदम और हव्वा द्वारा स्वर्गलोक को खोने दिए जाने के बारे में लिखा, ताकि इस्राएल को अदन की वाटिका में आदम और हव्वा द्वारा उठाये गए कदमों को वापस पीछे करने और उलटने के लिए प्रोत्साहित करे। केवल जब इस्राएल इस कहानी से शिक्षा प्राप्त करते हैं वे स्वर्गलोक को दोबारा प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते थे, और हम देखेंगे कि जिस प्रोत्साहन को मूसा ने इस्राएल को दिया था, परमेश्वर का वही संदेश आज हमारे लिए भी है। आदम और हव्वा के कदमों के उलट पीछे जाने के द्वारा, मसीही लोग भी आज स्वर्गलोक को पा सकते हैं।

उत्पत्ति 2 और 3 की हमारी जाँच तीन भागों में विभाजित होती है: सबसे पहले, हम इस अनुच्छेद की साहित्यिक संरचना की जाँच करेंगे। दूसरा, हम इस बात को समझने के लिए इन अध्यायों के वास्तविक अर्थ पर ध्यान-केंद्रित करेंगे, कि मूसा ने जिस तरह से इस्राएल के वंशजों के लिए इन्हें लिखा तो उसने ऐसे क्यों लिखा। और तीसरा, यह पूछने के द्वारा हम अपना ध्यान आधुनिक अनुप्रयोग की ओर लगायेंगे कि हमारे जीवनों में इस अनुच्छेद के उचित उपयोग की दिशा में नया नियम किस तरह से हमारा मार्ग दर्शन करता है। आइए अपने अनुच्छेद की साहित्यिक संरचना के साथ शुरु करते हैं।

साहित्यिक संरचना

यद्यपि उत्पत्ति 2-3 एक लम्बा अनुच्छेद है और कई विषयों को बताता है, वास्तव में यह एक एकीकृत कहानी को बनाता है। इस अनुच्छेद को सही रीति से समझने के लिए, हमें इन दोनों अध्यायों

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

पर एक साहित्यिक इकाई के रूप में ध्यान देने की आवश्यकता है। उत्पत्ति 2-3 में साहित्यिक संरचना की हमारी जाँच में दो प्रमुख मुद्दे होंगे: सबसे पहले, हम अनुच्छेद के प्रमुख हिस्सों के अवलोकन को समझेंगे; और दूसरा हम इन विभिन्न भागों के बीच कुछ महत्वपूर्ण समरूपताओं पर टिप्पणी करेंगे ताकि हम उस बात की गहराई को समझ सकें जिसे मूसा इस्राएल से कह रहा था। आइए उत्पत्ति 2-3 की साहित्यिक संरचना के अवलोकन के साथ शुरु करते हैं।

अवलोकन

2:4 के पहले भाग में दिखाई देने वाले उस संक्षिप्त शीर्षक के अलावा, ये दोनों अध्याय चार प्रमुख भागों में विभाजित होते हैं, और इन चार प्रमुख भागों को विषयों और पात्रों में बदलावों के साथ दर्शाया गया है। हमें इन चारों भागों पर विचार करना चाहिए और उनके मूल विषय-वस्तु को सारांशित करना चाहिए।

वाटिका में

हमारी कहानी का पहला नाटकीय चरण 2:4-17 में प्रकट होता है, जहाँ हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने आदम को अदन की वाटिका में रखा था। ये पद अदन की वाटिका के मनोरम दृश्य के साथ शुरु होते हैं, और जैसे कि यह अनुच्छेद हमें बताता है, कि पूरी वाटिका आदम के निवास और काम करने के लिए एक शानदार जगह थी। फिर इस भाग का संबंध आदम की सृष्टि और वाटिका में काम करने की उसकी नियुक्ति के लिए सीमित हो जाता है। परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा आदम को महान सौभाग्य दिया गया था। उसे परमेश्वर की ओर से वाटिका का ध्यान रखना था।

समृद्ध की गई परिस्थिति

हमारी कहानी के दूसरे चरण में 2:18-25 शामिल है, जिसको हम कहेंगे मानवता की "समृद्ध की गई परिस्थिति।" इस सामग्री में परमेश्वर ने आदम के जीवन में और भी अधिक आशीषों को जोड़ा। यह भाग एक नई समस्या को पेश करने के द्वारा शुरु होता है जिसे 2:18 में लिखा गया है। वहाँ, परमेश्वर ने आदम को देखा और इन वचनों को कहा:

> **फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, "आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं; मैं उसके लिये एक ऐसा सहायक बनाऊँगा जो उस से मेल खाए।" (उत्पत्ति 2:18)।**

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

2:18-25 का बाकी हिस्सा बताता है कि परमेश्वर ने इस समस्या का कैसे समाधान किया। आदम ने जानवरों के बीच एक साथी की तलाश की, लेकिन अंत में, परमेश्वर ने एक स्त्री को बनाया और उसे आदम के पास लाया। इस प्रकार से, परमेश्वर ने उस अद्भुत सृष्टि को और ज्यादा समृद्ध किया जिसे उसने पहले ही से आदम और हव्वा के लिए बनाया था।

शापित की गई परिस्थिति

हमारी कहानी का तीसरा चरण 3:1-21 है, जिसे हम कहेंगे मानवता की "परिस्थिति को शापित किया जाना।" यह सामग्री 3:1 में नए विषय और पात्र, बहकाने वाले सर्प (सांप) को पेश करने के साथ शुरु होती है। इस बिन्दु से आगे, 3:1-21 सर्प के बहकावे और उसके बहकावे के नतीजों से संबंधित है। हव्वा सर्प के बहकावे का शिकार बन जाती है जिसके कारण उसने और आदम ने उस वर्जित फल को खाया और वे ईश्वरीय श्रापों के आधीन हो गए।

वाटिका से बाहर

इस अनुच्छेद की व्यापक संरचना में चौथा तत्व है 3:22-24 जिसका शीर्षक हमने रखा है मानवता का "वाटिका से बाहर" होना। इस भाग को, शीर्षक में एक और महत्वपूर्ण बदलाव से चिह्नित किया गया है। हम परमेश्वर को जीवन के वृक्ष की समस्या के बारे में बोलता हुआ पाते हैं। 3:22 में हम इन वचनों को पढ़ते हैं:

> **फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, "मनुष्य भले बुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया है : इसलिये अब ऐसा न हो कि वह हाथ बढ़ाकर जीवन के वृक्ष का फल भी तोड़ के खा ले और सदा जीवित रहे।" (उत्पत्ति 3:22)।**

इस वृक्ष से आदम द्वारा फल खाने की संभावित समस्या से निपटने के लिए, परमेश्वर ने आदम को वाटिका से बाहर निकाल दिया और अदन के प्रवेश द्वार की रक्षा के लिए करुबों और ज्वलंत तलवार को तैनात कर दिया। उस समय से, परमेश्वर के प्रत्यक्ष हस्तक्षेप के बगैर मनुष्यों के पास अदन की वाटिका तक पहुँच नहीं होगी।

समरूपता

इस अनुच्छेद के चार प्रमुख विभाजनों को ध्यान में रख कर, इस अनुच्छेद द्वारा दर्शाए गए नाटकीय समरूपता को देखने के लिए अब हम उत्पत्ति 2-3 के ऊपर ज्यादा बारीकी से गौर कर सकते हैं। इन भागों में विभिन्न तत्वों की तुलना करके, मूसा ने अपनी कहानी की प्रमुख बातों को उजागर किया था। इस कहानी की समरूपताओं को खोजने के लिए, हम पहले उस संतुलन की ओर देखेंगे जो हमारी कहानी की शुरुआत और समापन के बीच मौजूद है, और फिर हम कहानी के बीच वाले भागों की समरूपता पर गौर करेंगे। आइए पहले इस अनुच्छेद की शुरुआत और समापन पर ध्यान करते हैं।

शुरुआत और समापन

जैसा कि हम देखेंगे, उत्पत्ति 2:4-17 और उत्पत्ति 3:22-24 कम से कम तीन महत्वपूर्ण तरीकों में एक दूसरे के साथ बहुत ज्यादा विरोधाभास में हैं।

पहला विरोधाभास स्थान में है। यह कहानी 2:7 में शुरु होती है जिसमें परमेश्वर ने आदम को स्वर्गलोक की वाटिका के भीतर रखा। आदम ईश्वरीय आशीषों से भरपूर स्थान में रहता एवं काम करता था; अद्भुत वनस्पति, जीवन देने वाले पानी, कीमती धातुओं और पत्थरों ने उसे चारों ओर से घेर रखा था। इसके विपरीत, कहानी की समाप्ति 3:24 में होती है जिसमें परमेश्वर आदम और हव्वा को वाटिका से बाहर निकाल देता है। यह भौगोलिक विरोधाभास स्पष्ट कर देता है कि पृथ्वी पर मानव जाति के लिए सबसे चाहने वाला स्थान अदन की वाटिका में था।

प्रत्येक भाग में ध्यान-केंद्रण में दूसरा विरोधाभास वाटिका के विशेष वृक्षों पर है। यद्यपि 2:4-17 दो वृक्षों का उल्लेख करता है, जीवन का वृक्ष और भले एवं बुरे के ज्ञान का वृक्ष, लेकिन जब हम 2:17 पर आते हैं तो ध्यान केवल एक वृक्ष की ओर मुड़ जाता है, ज्ञान का वृक्ष। इस वृक्ष के पास मानव जाति को भलाई एवं पाप का अनुभवपरक ज्ञान देने की शक्ति थी। यह उन चीज़ों को देखने के लिए उनकी आँखों को खोल सकता था जो उन्होंने पहले कभी नहीं देखी थीं।

इसके विपरीत, 3:22-24 में कहानी की समाप्ति पर, परमेश्वर को अब भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष से मतलब नहीं है, बल्कि विशेष रूप से जीवन के वृक्ष के साथ है। इस वृक्ष के पास मानव जाति को अनंत जीवन देने की शक्ति है। लेकिन परमेश्वर ने आदम को निर्वासित कर दिया और इस वृक्ष तक पहुँच को निषेध कर दिया। यह विरोधाभास स्पष्ट करता है कि वाटिका तक स्वतंत्र पहुँच, और वहाँ पाई जाने वाली सभी आशीषें जो मानवता के पास एक बार थीं, वे तब तक खो गई हैं जब तक परमेश्वर अन्यथा कोई और आदेश नहीं ठहराता है।

हमारी कहानी की शुरुआत और समाप्ति के बीच तीसरा विरोधाभास मानवता को दिए गए कार्य-आदेश में है। 2:15 में पहला चरण बताता है कि परमेश्वर ने आदम को बिना किसी दर्द और किसी परेशानी के साथ वाटिका में आशीषित कार्य के लिए नियुक्त किया था। परन्तु, 3:23 में, परमेश्वर ने आदम और हव्वा को वाटिका से निर्वासित कर दिया और वाटिका के बाहर उन्हें कड़ी मेहनत करने के लिए सज़ा दी। यह विरोधाभास भी कहानी पर एक आवश्यक दृष्टिकोण प्रदान करती है। न सिर्फ मानवता ने अदन में जीवन के आश्चर्य को खो दिया था, लेकिन साथ में जब तक हम वाटिका से दूर रहते हैं तो हमें कठिनाई भोगने के लिए दंडित भी किया गया है।

उत्पत्ति 2-3 के शुरुआत एवं समापन वाले भागों के बीच ये तीनों विरोधाभास इस कहानी के कुछ सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं पर हमारे ध्यान को आकृषित करते हैं। मूसा ने मानवीय परिस्थिति में आये उस प्रमुख बदलाव के बारे में लिखा जो अति-प्राचीन समयों में घटित हुआ था। परमेश्वर ने मूल रूप से यह नियोजित किया था कि मनुष्यों को उसकी वाटिका में रहना चाहिए, लेकिन आदम और हव्वा के पाप ने उन्हें कठिनाई और परेशानी में बाँध दिया, और उन्हें उस वृक्ष से दूर कर दिया जो अनंत जीवन देता है। अब, जैसा कि हम देखेंगे, विरोधाभास के ये समूह उस परिस्थिति के लिए प्रत्यक्ष तौर पर बातें करते हैं जिसमें इस्राएलियों ने स्वयं को पाया जब मूसा उन्हें प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर ले जाता है। इस्राएली लोग जब मिस्र में गुलामी की क्रूरता के अधीन पीड़ित थे तो वे अदन से बहुत दूर रह रहे थे। उन्हें अदन में परमेश्वर द्वारा दी गई आशीषों को वापस पाने की आवश्यकता थी।

बीच वाले भाग

कहानी के बाहरी भागों की विरोधाभास समरूपता को ध्यान में रखकर, हमें अपने ध्यान को कहानी के बीच वाले भागों, 2:18-25 और 3:1-21 की ओर मोड़ना चाहिए। ये दो आंतरिक चरण शुरुआत और समापन के बीच के खाली स्थान को भरते हैं और वे कम से कम तीन तरीकों में स्वयं अपने विरोधाभास वाले समरूपताओं के समूह को बनाते हैं।

पहला विरोधाभास परमेश्वर के साथ मनुष्यों के संबंध पर केंद्रित है। दूसरे चरण में हम आदम और परमेश्वर के बीच सामंजस्यपूर्ण संबंध को देखते हैं। 2:18 में परमेश्वर आदम के लिए चिन्ता करता है और हव्वा के रूप में आदम के लिए एक सिद्ध साथी को लाता है। यहाँ जो तस्वीर है उसमें परमेश्वर और मानव-जाति घनिष्ठ प्रेम-संबंध और शांति में हैं। फिर भी, कहानी के तीसरे भाग में, असामंजस्य परमेश्वर और मानव-जाति के बीच आरंभिक सामंजस्य का स्थान ले लेता है। आदम और हव्वा परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करते हैं, और 3:8 में वे परमेश्वर की उपस्थिति से छुपते हैं, और परमेश्वर आदम और हव्वा के खिलाफ़ गुस्से में बात करता है।

दूसरा विरोधाभास मानवीय संबंधों में है। 2:18-25 के दूसरे चरण में, आदम और हव्वा परम आनंद में थे। 2:23 में आदम यह कहते हुए, बाइबल में पहली प्रेम कविता के साथ उमड़ पड़ा, कि हव्वा "मेरी हड्डियों में की हड्डी, और मेरे माँस में का माँस है," और वे दोनों नंगे और बिना किसी शर्म के एक साथ रहते थे। हालांकि, इसके विरोधाभास में, 3:16 में परमेश्वर यह घोषणा करते हुए इस संबंध के ऊपर अभिशाप देता है, कि पुरुष और स्त्री के बीच संघर्ष चलता रहेगा। स्त्री की इच्छा उसके पति की ओर होगी और पति उस पर शासन करेगा। इन वचनों ने उजागर किया कि आदम और हव्वा के पाप ने न केवल परमेश्वर के साथ उनके संबंध को खराब किया, बल्कि उनके आपस के संबंध को भी। और उस समय से आगे को, मानवीय संबंधों को कठिनाई और संघर्ष से चिह्नित किया गया है।

तीसरा विरोधाभास बुराई के साथ मानवता के संबंध में प्रकट होता है। दूसरे चरण में, कहानी से बुराई गायब है। आदम और हव्वा पूरी तरह से निर्दोष और बुराई की शक्ति से अलग थे। लेकिन तीसरे चरण तक, मानवता सर्प का शिकार बन कर गिर चुकी थी और बुराई के साथ दीर्घकालिक संघर्ष में गुलाम बन गई थी। 3:15 में परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की, कि, एक दिन हव्वा का बीज सर्प को हरायेगा, लेकिन आदम और हव्वा को कोई तत्काल जीत नहीं दी गई थी।

कहानी के दूसरे और तीसरे भागों के बीच ये विरोधाभास मूसा की उन कई चिन्ताओं को देखने में हमारी मदद करते हैं जब वह इस कहानी को लिख रहा था। मूसा ने आदम और हव्वा के बारे में उन तरीकों में लिखा जो इस्राएल के अनुभव से जुड़ते थे। पाप ने इस्राएल के जीवन में विनाश को बरकरार रखा था। इसने परमेश्वर के साथ और एक दूसरे के साथ लोगों के संबंध को नुकसान पहुँचाया था, और इससे भी अधिक, हर दिन की कठिनाई जिसका वे सामना करते थे मूसा और इस्राएल को याद दिलाती थी कि, आदम और हव्वा के समान, उन्हें भी उस समय के लिए इंतजार करना होगा जब परमेश्वर अंततः अपने लोगों को बुराई पर जीत देगा।

इस विषय-वस्तु की साहित्यिक संरचना को ध्यान में रख कर, हम इस अनुच्छेद के वास्तविक अर्थ में जाने के लिए अब तैयार हैं। परमेश्वर की वाटिका से मनुष्यों के निष्कासन की कहानी को मूसा ने क्यों लिखा? जब वह इस्राएल को प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर ले जा रहा था तो वह उन्हें क्या संदेश दे रहा था?

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

वास्तविक अर्थ

अब, यह सुनिश्चित है कि, बहुत ही बुनियादी स्तर पर, मूसा ने उन इस्राएली लोगों को जिनकी वह अगवाई कर रहा था कुछ सामान्य ईश्वरीय ज्ञान के विषयों को सिखाने के लिए इस कहानी को लिखा। उसने संसार में पाप की शुरुआत, उसकी प्रकृति और परिणामों के बारे में उन्हें बहुत कुछ बताया। और ये बहुत ही महत्वपूर्ण विषय हैं। फिर भी, जैसा कि हमने पिछले पाठ में देखा था, मूसा ने सिर्फ इस्राएल को ऐसे सामान्य ऐतिहासिक एवं ईश्वरीय-ज्ञान के विषयों के बारे में सूचित के लिए अपने अति-प्राचीन इतिहास को नहीं लिखा था। इसके विपरीत, कई अन्य प्राचीन लेखकों के समान, मूसा ने अपने लोगों को वर्तमान धार्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों के बारे में व्यवहारिक निर्देश देने के लिए अपने अति-प्राचीन इतिहास को लिखा, मुख्यतः, इस मामले में, मिस्र को छोड़ना और कनान देश को जाना।

यह देखने के लिए कि मूसा ने अति-प्राचीन अदन की वाटिका और कनान पर इस्राएल की जीत को किस तरह जोड़ा, हम उसकी कहानी के तीन पहलुओं को देखेंगे: सबसे पहला, अदन की वाटिका के लिए मूसा की तस्वीर; दूसरा, आदम और हव्वा से वफादारी की शर्त पर उसका ध्यान-केंद्रण; और तीसरा, आदम और हव्वा पर दिए गए श्रापों का उसका चित्रण। आइये, सबसे पहले अदन की वाटिका के लिए मूसा के वर्णन को देखते हैं।

वाटिका

वाटिका के लिए मूसा का विवरण इतना जटिल है कि हमारे कई आधुनिक प्रश्न हमेशा के लिए अनुत्तरित रहेंगे। फिर भी, मूसा की प्रस्तुति में प्रमुख बातों को समझना हमारे लिए संभव है। जैसा कि हम देखेंगे, मूसा ने अदन की वाटिका का विवरण उन तरीकों में दिया जिनमें अदन को प्रतिज्ञा किए हुए देश के समान पहचाना गया था। मूसा के दृष्टिकोण से, वह देश जहाँ वह इस्राएल को अपने समय में ले जा रहा था वास्तव में अदन नामक अति-प्राचीन देश का स्थान था।

उत्पत्ति 2-3 के कई पहलू स्पष्ट करते हैं कि मूसा चाहता था कि इस्राएल कनान को अदन के देश के साथ जोड़े, लेकिन विशेष रीति से उसकी कहानी की दो विशेषताएं महत्वपूर्ण हैं: पहला, अदन की पहचान; और दूसरा, अदन की पवित्रता। आइए पहले अदन की पहचान को देखते हैं।

पहचान

उत्पत्ति 2:10-14 में हम इन वचनों को पढ़ते हैं:

उस वाटिका को सींचने के लिये एक महानदी अदन से निकली और वहाँ से आगे बहकर चार धाराओं में बँट गई। पहली धारा का नाम पीशोन है; यह वही है जो हवीला नाम के सारे देश को जहाँ सोना मिलता है,... दूसरी नदी का नाम गीहोन है;

यह वही है जो कूश के सारे देश को घेरे हुए है। और तीसरी नदी का नाम हिद्देकेल है; यह वही है जो अश्शूर के पूर्व की ओर बहती है। और चौथी नदी का नाम फरात है। (उत्पत्ति 2:10-14)।

मूसा ने लिखा कि एक ही महानदी अदन से बहती थी और चार धाराओं में विभाजित होती थीं। ये धाराएं पीशोन, गीहोन, हिद्देकेल और फरात थीं। अदन की एक प्रमुख नदी इन चार छोटी नदियों को पानी देती थीं। यह उनकी मुख्य स्रोत थी।

अब, जब हम यहाँ पर मूसा के विवरण की खोज करते हैं, तो हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि संसार की शुरुआत से ही हमारे ग्रह के इतिहास में कई भौगोलिक परिवर्तन हुए हैं। यहाँ तक कि मूसा के समय में भी कोई एक महानदी नहीं थी जो इन चारों धाराओं को पानी देती थी। पवित्र शास्त्र सिखाता है कि पानी का यह केंद्रिए स्रोत केवल अंत के समय में प्रकट होगा। फिर भी, उन चार नदियों के लिए मूसा का संदर्भ जिन्हें इस केंद्रिए स्रोत से पानी मिलता था, हमें उस स्थान की एक अनुमानित तस्वीर देता है जहाँ पर वह विश्वास करता था कि अदन स्थित था।

हम आधुनिक समय की हिद्देकेल और फरात नदियों के क्षेत्र के साथ 2:14 में वर्णित हिद्देकेल और फरात की पहचान कर सकते हैं। यह कि उत्पत्ति की पुस्तक इन दोनों नदियों को संदर्भित करती है, इस तथ्य ने कई आधुनिक टिकाकारों को सुझाव दिया है कि उत्पत्ति की पुस्तक बेबीलोन की पौराणिक कथाओं से सहमत होती है, कि अदन मेसोपोटामिया के क्षेत्र में था। बेबीलोन की भाषा में, एडिन (*edin*) का अर्थ है "एक समतल भूमि" या "एक खुली सपाट भूमि," जो कि निचले हिद्देकेल-फरात क्षेत्र के लिए उपयुक्त शब्द है। इब्रानी भाषा में, हालांकि, ईडन (eden) का अर्थ "एक समतल सपाट" नहीं है। इसका अर्थ है "एक सुहावनी या मनमोहक जगह।" इसलिए, मूसा बेबीलोन वाले शब्द का प्रयोग बिल्कुल भी नहीं कर रहा था। उसने एक इब्रानी शब्द का प्रयोग किया जो अदन के लिए बेबीलोन वाले शब्द के जैसा सुनाई देता था, लेकिन इस स्थान के लिए उसकी अवधारणा एक जैसी नहीं थी। वास्तव में, उत्पत्ति की कहानी स्पष्ट रूप से बताती है कि अदन मेसोपोटामिया तक ही सीमित नहीं था। जैसा कि हमने उत्पत्ति 2:10 में देखा, कि हिद्देकेल और फरात एक बहुत बड़ी नदी से निकलते थे जो कि अदन में स्थित थी। हम पद 10 में पढ़ते हैं:

उस वाटिका को सींचने के लिये एक महानदी अदन से निकली और वहाँ से आगे बहकर चार धाराओं में बँट गई। (उत्पत्ति 2:10)

यह अनुच्छेद सिखाता है कि अदन में स्थित नदी हिद्देकेल और फरात को पानी देती थी, न कि अदन हिद्देकेल और फरात के क्षेत्र तक सीमित था। मूसा ने अदन की पूर्वी सीमा की ओर सामान्य दिशा प्रदान करने के लिए हिद्देकेल और फरात का उल्लेख किया। पूर्व में ये महान नदियां अदन की पूर्वी सीमा को चिह्नित करते थे।

उत्पत्ति 2 में वर्णित अन्य नदियों के स्थानों द्वारा इस दृष्टिकोण की पुष्टि की गई है। 2:11, 13 में मूसा ने नदियों की एक और जोड़ी का उल्लेख किया। उसने लिखा कि अदन की नदी पीशोन को पानी देती थी, जो हवीला के भीतर से बहती थी, और वह गीहोन को भी पानी देती थी जो कूश के सारे देश को घेरे हुए था। पुराने नियम में, हवीला और कूश की भूमि को अकसर मिस्र के क्षेत्र से जोड़ा गया

है। हम पक्के तौर पर यह सुनिश्चित नहीं कर सकते कि मूसा ने बड़ी नील नदी के संबंध में इन नदियों को कैसे समझा था, लेकिन यह कहना ठीक है कि उसने अदन की पश्चिमी सीमा के रूप में उत्तरी मिस्र के क्षेत्र की ओर इंगित किया था।

इस तरह हम देख सकते हैं, कि मूसा के दृष्टिकोण से, अदन कोई छोटी जगह नहीं थी। यह हिद्देकेल-फरात से लेकर मिस्र की सीमा तक का फैला हुआ एक बड़ा क्षेत्र था---लगभग वह पूरा क्षेत्र जिसे अब हम उपजाऊ नवचंद्र के आकार वाला क्षेत्र (क्रेसेंट) कहते हैं, अदन की वाटिका, अदन के बड़े क्षेत्र का केंद्रबिंदु।

शुरुआत में, मूसा द्वारा उपजाऊ क्रेसेंट के साथ अदन की पहचान बहुत महत्वपूर्ण नहीं लगेगी। लेकिन हकीकत में, जब मूसा उत्पत्ति की पुस्तक को लिख रहा था तो इस्राएल के लिए अदन के महत्व को समझना महत्वपूर्ण है। उत्पत्ति की पुस्तक में अन्य स्थानों पर, मूसा ने इस्राएल को सिखाने के लिए उत्पत्ति 2 की ओर इशारा किया था कि अदन का देश, उपजाऊ क्रेसेंट, वह देश है जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने इस्राएल से की थी, वह देश जहाँ वह उन्हें ले जा रहा था। यह दृष्टिकोण विशेष रूप से तब स्पष्ट होता है जब परमेश्वर ने उत्पत्ति 15:18 में अब्राहम से बात की थी। इस अनुच्छेद में प्रतिज्ञा किए हुए देश की सीमाओं का परमेश्वर ने जिस तरह से वर्णन किया उसे सुनिए:

> **इसी दिन यहोवा ने अब्राम के साथ यह वाचा बाँधी, "मिस्र के महानद से लेकर परात नामक बड़े नद तक जितना देश है...मैं ने तेरे वंश को दिया है। (उत्पत्ति 15:18)**

यहाँ पर हम एक तरफ देखते हैं कि परमेश्वर ने अब्राहम से प्रतिज्ञा की, कि उसका देश हिद्देकेल-फरात के क्षेत्र तक फैलेगा, और वह "मिस्र की नदी" तक पहुँच जाएगा कई टीकाकारों ने सुझाव दिया है कि "मिस्र की महानद" नील नदी के लिए इशारा नहीं हो सकता, बल्कि यह मिस्र क्षेत्र के सीनै वाली सीमा में छोटी नदी के लिए है। सभी संभावनाओं में, यह स्पष्ट है कि यह पद अदन की भौगोलिक सीमाओं को दिखाता है जैसा कि वे उत्पत्ति 2 में प्रकट होते हैं। उत्पत्ति 2 के लिए यह इशारा स्पष्ट करता है कि मूसा विश्वास करता था कि परमेश्वर ने अब्राहम और उसके वंशजों से उस देश की प्रतिज्ञा की थी जो एक समय में अदन का देश कहलाता था। मूसा की दृष्टिकोण से, जब इस्राएल कनान देश की ओर जा रहा था, तो वे वास्तव में अदन के अति-प्राचीन देश के स्थान की ओर बढ़ रहे थे।

अदन की ओर इस्राएल के जाने के महत्व को उजागर करने के लिए, मूसा ने उस स्थान की पवित्र प्रकृति पर जोर दिया। उसने इस्राएल को सिखाने के लिए अदन की पवित्रता की ओर इशारा किया, कि, प्रतिज्ञा किया हुआ देश जहाँ वह उन्हें ले जा रहा था, एक ऐसा स्थान था, जहाँ वे परमेश्वर की विशेष उपस्थिति में प्रवेश पाने की आशीष को प्राप्त कर सकते थे।

पवित्रता

वह प्राथमिक तरीका जिसमें मूसा ने अदन की पवित्रता को व्यक्त किया था, वह उस शब्दावली में था जिसका उपयोग वह मिलाप वाले तंबू का वर्णन करने के लिए भी करता है। यद्यपि परमेश्वर सर्वव्यापी है, और एक सामान्य समझ में हर जगह मौजूद है, मूसा ने एक मिलाप वाला तंबू बनाया जहाँ परमेश्वर अपने लोगों से मिलने के लिए विशेष तरीके से आता है, और इस मिलाप वाले तंबू में परमेश्वर अपनी उपस्थिति को प्रदर्शित करेगा, अपनी व्यवस्था देगा, अपने लोगों की आराधना को

स्वीकार करेगा और अपने अनुग्रह से उन्हें आशीषित करेगा। इसलिए, जब मूसा ने अदन की वाटिका को उस शब्दावली में चित्रित किया जिसका उपयोग उसने मिलाप वाले तंबू का वर्णन करने के लिए भी किया, तो उसने खुलासा किया कि अदन, अर्थात कनान, पृथ्वी पर परमेश्वर की विशेष उपस्थिति का स्थान था। वहाँ पर, इस्राएल परमेश्वर की महान आशीषों को प्राप्त कर सकता था।

अदन के कम से कम सात पहलू संकेत देते हैं कि वह मिलाप वाले तंबू के समान, परमेश्वर की विशेष उपस्थिति का पवित्र स्थान था। सबसे पहले, 3:8 में जब मूसा ने एक विशेष अभिव्यक्ति का उपयोग किया तो वह कहता है कि परमेश्वर "वाटिका में फिरता था।" इब्रानी भाषा में जिस शब्द का अनुवाद "फिरना" किया गया है वह *मित हालक* מִתְהַלֵּךְ शब्द है। यह शब्दावली महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उन विशेष तरीकों में एक है जिसमें मूसा ने लैव्यवस्था 26:12 और अन्य अनुच्छेदों में मिलाप वाले तंबू में परमेश्वर की उपस्थिति का वर्णन किया था।

दूसरा, 2:9 में हमने अदन की वाटिका की प्रमुख विशेषता के रूप में जीवन के वृक्ष के बारे में पढ़ा। इस सांस्कारिक वृक्ष के पास उन लोगों को अनंत जीवन देने की शक्ति थी जो इसके फलों को खाते थे। और यद्यपि बाइबल इसको स्पष्ट रूप से नहीं कहती, लेकिन हाल के पुरातात्विक शोध ने ध्यान दिया है कि प्राचीन संसार में कई जगहों पर जीवन के वृक्ष के चित्रों को पवित्र स्थानों में शैलीबद्ध किया गया है। यह सबूत दृढ़ता से सुझाव देता है कि मूसा के मिलाप वाले तंबू का सात शाखों वाला दीपक, मेनोरह, शायद बहुत कुछ जीवन के वृक्ष का शैलीबद्ध प्रतिनिधित्व था। इस तरह, अदन की वाटिका को पृथ्वी पर वास्तविक पवित्र स्थान के रूप में दिखाया गया है।

तीसरा तरीका जिसमें मूसा ने अदन की पवित्रता पर ध्यान दिया, वह था, क्षेत्र में पाए जाने वाले सोने और सुलेमानी पत्थर पर उसका ध्यान केंद्रण। 2:12 में पढ़ते हैं कि अदन के क्षेत्र में सोना और सुलेमानी पत्थर बड़ी मात्रा में उपलब्ध थे। जैसा कि हम उम्मीद कर सकते हैं, निर्गमन 25-40 मिलाप वाले तंबू के निर्माण के महत्वपूर्ण अवयवों के रूप में सोने और सुलेमानी पत्थर का उल्लेख करता है।

अदन की वाटिका और मिलाप वाले तंबू के बीच चौथा संबंध करुबों और स्वर्गदूतों की उपस्थिति है। 3:24 के अनुसार, परमेश्वर ने जीवन के वृक्ष तक पहुँच के खिलाफ चौकीदारी करने के लिए अदन की वाटिका में करुबों को नियुक्त किया था। ठीक इसी तरह, निर्गमन 25:18 और 37:9 के जैसे अनुच्छेदों में मिलाप वाले तंबू के पूर्ण सजावटों में करुब प्रकट होते हैं। इन करुबों ने इस्राएल को न सिर्फ स्वर्ग के स्वर्गदूतों के बारे में, बल्कि अदन में पवित्र स्थान की चौकीदारी करते स्वर्गदूतों के बारे में भी याद दिलाया था।

पांचवां, हम 3:24 में पढ़ते हैं कि अदन का प्रवेश द्वार "पूर्व में" अर्थात, पूर्वी दिशा में था। यह तथ्य तब तक महत्वहीन लगता है जब तक हम एहसास करते हैं कि निर्गमन 27:13 और कई अन्य अनुच्छेदों के अनुसार, मिलाप वाले तंबू का प्रमुख प्रवेश द्वार पूर्वी दिशा में था। प्राचीन मध्य-पूर्व में अधिकांश मंदिरों के साथ यही बात थी। एक बार फिर, अदन को परमेश्वर के पवित्र निवास स्थान के रूप में दिखाया गया है।

छठवां, अदन में आदम की सेवा के बारे में मूसा ने उस भाषा का प्रयोग किया है जिसका वह दूसरी जगहों पर मिलाप वाले तंबू में लेवीयों की सेवा के लिए करता है। 2:15 में मूसा ने वाटिका में आदम की जिम्मेदारी का वर्णन निम्न तरीके से किया है:

> **तब [यहोवा परमेश्वर] ने आदम को लेकर अदन की वाटिका में रख दिया, कि वह उसमें काम करे और उसकी रक्षा करे। (उत्पत्ति 2:15)**

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

ये शब्द गिनती 3:7-8 और 8:26 में भी एक साथ प्रकट होते हैं। वहाँ, मूसा ने इसी अभिव्यक्ति का प्रयोग करते हुए मिलाप वाले तंबू में लेवी लोगों की सेवा का वर्णन किया। आदम और हव्वा अदन की वाटिका में याजकों के समान सेवा करते थे।

सातवां, यह महत्वपूर्ण है कि अदन की वाटिका का बनाया जाना सृष्टि के छः दिनों के बाद हुआ था। जैसा कि हमने पिछले पाठ में देखा था, छः दिनों की सृष्टि का कार्य उत्पत्ति 2:1-3 में परमेश्वर द्वारा सब्त को मनाने के साथ समाप्त हुआ था। दिलचस्प बात यह है, कि निर्गमन 24:16 और उससे आगे के पदों के अनुसार, मूसा ने परमेश्वर के साथ पर्वत पर छः दिन बिताए थे, और परमेश्वर ने उसे सातवें दिन मिलाप वाला तंबू बनाने के निर्देश दिए।

अदन की सात विशेषताएं दिखाती हैं कि मूसा ने मिलाप वाले तंबू के जैसे ही अदन की वाटिका को पवित्र स्थान के रूप में माना था। यह संसार में परमेश्वर की विशेष उपस्थिति का स्थान था। और उस स्थान के निकट होना परमेश्वर की आशीषों के निकट होना था।

जैसा कि हमने पहले ही देख लिया है, मूसा विश्वास करता था कि कनान का स्थान ही अदन था। परिणामस्वरूप, अदन की पवित्र प्रकृति पर ध्यान-केंद्रित करने में, मूसा कनान देश की पवित्र प्रकृति पर भी ध्यान आकृषित कर रहा था। कनान के निकट होने का अर्थ था कि उस स्थान के निकट होना जिसे परमेश्वर ने शुरुआत से अपने पवित्र निवास स्थान होने के लिए अभिषिक्त किया था। व्यवस्थाविवरण 12:10-11 इस भविष्य के पवित्र स्थान के बारे में मूसा की शिक्षा को देखने के लिए सबसे अच्छे अनुच्छेदों में से एक है। वहाँ उसने इन वचनों को लिखा:

> **परन्तु जब तुम यरदन पार जाकर उस देश में जिसके भागी तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें करता है बस जाओ, और वह तुम्हारे चारों ओर के सब शत्रुओं से तुम्हें विश्राम दे, और तुम निडर रहने पाओ, तब जो स्थान तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपने नाम का निवास ठहराने के लिये चुन ले उसी में तुम अपने होमबलि, और मेलबलि, और दशमांश, और उठाई हुई भेंटें; (व्यवस्थाविवरण 12:10-11)**

यह अनुच्छेद कनान देश के लिए मूसा के दर्शन की एक प्रमुख विशेषता को उजागर करता है। उसने जोर देकर कहा कि एक दिन कनान परमेश्वर की उपस्थिति के लिए स्थायी निवास स्थान होगा--- परमेश्वर यहोवा के लिए एक मंदिर।

यह सुनिश्चित है, कि मूसा के दिनों में कनान देश, जैसा कि, अदन मूल रूप से था उसकी मात्र एक छाया भर ही था। यहाँ तक कि जब सुलेमान ने यरूशलेम में मंदिर को बनाया, तब भी प्रतिज्ञा किया हुआ देश पूरी रीति से पाप से छुड़ाया नहीं गया था न ही उसको उसकी मूल सिद्धता में फिर से बहाल किया गया था। फिर भी, जब मूसा ने अदन की पवित्रता के बारे में लिखा, तो उसने इस्राएलियों के सामने यह दर्शन रखा कि एक दिन उनका देश कैसा बन सकता है। प्रतिज्ञा किए हुए देश को पहुँचना अदन के निकट पहुँचना था, यानी पृथ्वी पर परमेश्वर की पवित्र उपस्थिति का स्थान। जिस तरह परमेश्वर ने शुरुआत में आदम और हव्वा को अद्भुत मंदिर वाटिका में रखा था, परमेश्वर अब इस्राएल को कनान देश ला रहा था, और एक बार जब वे उस देश में रहने लगते हैं, तो देश के लोग परमेश्वर की विशेष उपस्थिति में रहने की आशीषों का अनुभव लेना शुरु कर देंगे।

अब जब कि हम देख चुके हैं कि मूसा ने कैसे अदन में आदम और हव्वा की आशीषों को उस अनुग्रह के पूर्वाभास के रूप में प्रस्तुत किया जो प्रतिज्ञा किए हुए देश में इस्राएल के लिए इंतजार कर रहा था, तो अब हम उत्पत्ति 2-3 में दूसरे विषय को देखने की स्थिति में हैं: आदम और हव्वा की वफादारी के लिए परमेश्वर की परीक्षा। यह विषय मूसा की प्रस्तुति में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

वफादारी

अदन के बारे में मूसा की कहानी के लिए वफादारी का विषय महत्वपूर्ण था। यद्यपि अदन आश्चर्यजनक आशीष का स्थान था, वह ऐसा स्थान भी था जो नैतिक जिम्मेदारी की माँग करता था। मूसा ने इस तथ्य पर इसलिए जोर दिया क्योंकि वह चाहता था कि इस्राएली लोग याद रखें कि प्रतिज्ञा किया हुआ देश जहाँ वे जा रहे थे परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति इस्राएल के वफादार होने की भी माँग करता था।

यह समझने के लिए कि मूसा ने इस विषय पर क्यों जोर दिया, हमें दो बातों की खोज करने की आवश्यकता है: अदन की वाटिका में वफादारी की शर्त, और कनान में वफादारी की शर्त। आइए पहले उस वफादारी को देखते हैं जिसकी अपेक्षा अदन की वाटिका में परमेश्वर आदम और हव्वा से करता था।

अदन में

वाटिका में वफादारी का विषय उत्पत्ति 2 में बहुत शुरु में प्रकट होता है और यह पूरे 2 और 3 अध्यायों में बार-बार फिर से प्रकट होता है। और कई मायनों में, यह इन अध्यायों का प्रमुख विषय है। उत्पत्ति 2:16-17 में परमेश्वर ने जिस तरीके से वफादारी के लिए आदम को चुनौती दी उसे सुनिए:

> **और यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी, "तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है; पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना : क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा।" (उत्पत्ति 16:17)**

अब. यह पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है कि क्यों परमेश्वर ने हमारे पहले माता-पिता को इस विशेष वृक्ष से मना किया था; आखिरकार, पवित्र-शास्त्र के अन्य भागों में भले और बुरे को जानना उपलब्धि माना गया है। फिर भी, इस अनिश्चितता के बावजूद, यह साफ है कि परमेश्वर ने यह देखने के लिए आदम और हव्वा को जाँचना चाहा कि वे उसके प्रति वफादार होंगे कि नहीं। यदि आदम और हव्वा आज्ञाकारी रहते हैं, तो वे परमेश्वर से इनसे भी बड़ी आशीषों को प्राप्त करेंगे। लेकिन यदि वे अनाज्ञाकारी साबित होते हैं, तो वे परमेश्वर के दंड को भोगेंगे। अदन एक पवित्र स्थान था, और वहां रहने वाले लोगों को भी पवित्र होना था।

कनान में

अदन की वाटिका में वफादारी की परीक्षा पर ध्यान-केंद्रित करने के द्वारा, मूसा ने इस्राएलियों से जिन्हें वह प्रतिज्ञा किए हुए देश के ओर ले जा रहा था, ठीक वैसी ही वफादारी की आवश्यकता के लिए जोर दिया था। जब मूसा इस्राएल को प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर ले जा रहा था, तो उसने उन्हें बार-बार चेतावनी दी कि परमेश्वर अपने प्रति उनसे वफादारी की माँग करता है। मूसा ने संक्षेप में इस बात पर अपनी शिक्षा का व्यवस्थाविवरण के आठवें अध्याय में सारांश दिया है। व्यवस्थाविवरण 8:1 में हम इन वचनों को पढ़ते हैं:

> **"जो जो आज्ञा मैं आज तुझे सुनाता हूँ उन सभों पर चलने की चौकसी करना, इसलिये कि तुम जीवित रहो और बढ़ते रहो, और जिस देश के विषय में यहोवा ने तुम्हारे पूर्वजों से शपथ खाई है उसमें जाकर उसके अधिकारी हो जाओ। (व्यवस्थाविवरण 8:1)**

इस पद से यह बात स्पष्ट है कि परमेश्वर इस्राएल से अपने प्रति वफादारी की माँग करता था ताकि वे कनान देश में प्रवेश और उसमें वास कर सकें। वास्तव में, जंगल में देश के पूरे भ्रमण के दौरान, उन्हें यह सिखाने के लिए कि पवित्र कैसे बनना है परमेश्वर ने इस्राएलियों की परीक्षा की थी। व्यवस्थाविवरण 8:2 में हम इन वचनों को पढ़ते हैं:

> **और स्मरण रख कि तेरा परमेश्वर यहोवा उन चालीस वर्षों में तुझे सारे जंगल के मार्ग में से इसलिये ले आया है, कि वह तुझे नम्र बनाए, और तेरी परीक्षा करके यह जान ले कि तेरे मन में क्या क्या है, और कि तू उसकी आज्ञाओं का पालन करेगा या नहीं। (व्यवस्थाविवरण 8:2)**

इसके अलावा, मूसा ने यह भी स्पष्ट किया कि एक बार जब इस्राएल का राष्ट्र पवित्र देश में आता है, तो उन्हें परमेश्वर के प्रति वफादार बने रहना है, नहीं तो वे इस सौभाग्य को खो देंगे। व्यवस्थाविवरण 8:10-20 में जिस तरीके से उसने इसे कहा उसे सुनिए:

> **और तू पेट भर खाएगा, और उस उत्तम देश के कारण जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देगा उसे धन्य मानेगा। "इसलिये सावधान रहना, कहीं ऐसा न हो कि अपने परमेश्वर यहोवा को भूलकर उसकी जो जो आज्ञा, नियम, और विधि मैं आज तुझे सुनाता हूँ उनका मानना छोड़ दे;... यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा को भूलकर दूसरे देवताओं के पीछे हो लेगा, और उनकी उपासना और उनको दण्डवत् करेगा, तो मैं आज तुम को चिता देता हूँ कि तुम निःसन्देह नष्ट हो जाओगे। जिन जातियों को यहोवा तुम्हारे**

सम्मुख से नष्ट करने पर है, उन्हीं के समान तुम भी अपने परमेश्वर यहोवा का वचन न मानने के कारण नष्ट हो जाओगे। (व्यवस्थाविवरण 8:10-20)

मूसा जानता था कि इस्राएली लोगों को, आदम और हव्वा की ही तरह, परमेश्वर की आज्ञाओं के खिलाफ विद्रोह करने की आदत थी। और इन प्रवृत्तियों के कारण, मूसा ने चेतावनी देने के लिए वाटिका में आदम और हव्वा की परीक्षा पर ध्यान-केंद्रित किया कि परमेश्वर कनान में रहने की इच्छा रखने वाले हर एक व्यक्ति से वफादारी की माँग करता है। बेशक, परमेश्वर इस्राएल से सिद्धता की माँग नहीं करता, और यह केवल परमेश्वर के अनुग्रह से ही संभव है कि कोई व्यक्ति वफादार बने। फिर भी, अगर इस्राएल परमेश्वर की व्यवस्था का संगीन रूप से उल्लंघन करे और उससे दूर हो जाए, जैसा कि आदम और हव्वा ने वाटिका में किया था, तो वे प्रतिज्ञा किए हुए देश की आशीषों का आनंद नहीं ले पाएंगे। जब मूसा ने इस्राएल को प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया, तो वह चिंतित था कि जीवन की इस विशेषता को वे उस देश में याद रखें।

व्यवस्थाविवरण 8 की शिक्षा को ध्यान में रखते हुए, आदम और हव्वा से वफादारी की माँग पर मूसा के ध्यान-केंद्रण के प्रमुख कारण को हम देख सकते हैं। उसने इस मुद्दे पर इस्राएलियों को प्रेरित करने के लिए जोर दिया कि परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति वफादार बने रहने के द्वारा वे उस कार्य को उलट सकेंगे जो आदम और हव्वा ने किया था। आदम और हव्वा को वाटिका में परखा गया था और उन्हें बाहर निकाल दिया गया था क्योंकि उन्होंने पाप किया था। मूसा के दिनों में, इस्राएल अभी भी अदन की वाटिका के बाहर था, लेकिन परमेश्वर ने उन्हें परखा ताकि अदन में फिर से प्रवेश और परमेश्वर की आशीषों में वहाँ वास करने के लिए इस्राएल देश को तैयार करे।

इसलिए हम देखते हैं कि मूसा ने अदन की वाटिका में वफादारी की परीक्षा के बारे में लिखा था, उसने न केवल इस्राएल को समझाया कि आदम और हव्वा के अति-प्राचीन दिनों में क्या हुआ था। बल्कि उसने यह भी समझाया कि उसके अपने दिनों में क्या हो रहा था। परमेश्वर इस्राएल को अदन की वाटिका में जीवन की अद्‌भुत आशीष को पेश कर रहा था। फिर भी, आदम और हव्वा के समान, वे इन आशीषों का आनंद नहीं ले सकते थे जब तक कि वे परमेश्वर के प्रति वफादार न हों। मूसा इस्राएल को एक पवित्र लोग के रूप विश्वास के द्वारा जीने के लिए बुला रहा था, जो परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति पूरी रीति से समर्पित हों। केवल तभी वे देश में प्रवेश और वहाँ शांति से रहने की आशा कर सकते थे।

अभी तक हमने देखा है कि किस तरह मूसा ने अदन के देश और कनान देश को पृथ्वी पर परमेश्वर की आशीष वाले स्थान के रूप में चित्रित किया था, और हमने यह भी देखा कि उसने इस विचार को कैसे व्यक्त किया कि दोनों देश उनमें रहने वाले लोगों से वफादारी वाली सेवा की माँग करते थे। अब हम इस्राएल के लिए उत्पत्ति 2 और 3 के वास्तविक अर्थ के तीसरे आयाम पर ध्यान-केंद्रित करने जा रहे हैं: आदम और हव्वा की बेवफाई के परिणाम।

परिणाम

वाटिका में बेवफाई के परिणामों को देखने के लिए, हम आदम और हव्वा के पाप के तीन परिणामों को देखेंगे: मृत्यु, दर्द और निष्कासन।

मृत्यु

पहले स्थान पर, मूसा ने समझाया कि परमेश्वर ने आदम और हव्वा को पाप के परिणामस्वरूप मृत्यु की चेतावनी दी थी। यह विषय पहली बार उत्पत्ति 2:17 में आदम को परमेश्वर की चेतावनी में प्रकट होती है। वहाँ, परमेश्वर ने कहा:

> **पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना: क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा।" (उत्पत्ति 2:17)**

इन वचनों में कि "तू अवश्य मर जाएगा" एक वाक्यांश शामिल है जो आने वाली मृत्यु की निश्चितता को दर्शाता है। व्याकरण की यह शब्द रचना उस तरीके के एकदम समान है जिसमें मूसा की व्यवस्था मृत्यु की सज़ा की धमकी देती थी। जब मूसा की व्यवस्था गंभीर अपराध के अपराधियों के खिलाफ मृत्यु की सज़ा की धमकी देती थी, तो मूसा घोषित करता था, "वह निश्चित रूप से मर जाएगा" या "वे निश्चित रूप से मर जाएंगे।" इन अनुच्छेदों का कानूनी संदर्भ सुझाव देता है कि ये अभिव्यक्तियाँ मृत्युदंड घोषित करने के सूत्र जैसे तरीके थे। परमेश्वर यह नहीं कह रहा था कि आदम और हव्वा तुरंत मर जाएंगे, परन्तु यह कि पाप के कारण मृत्यु निश्चित रूप से आएगी।

इस प्रकाश में उत्पत्ति 2:17 में आदम के लिए परमेश्वर की धमकी को हम ऐसा बताते हुए समझ सकते हैं कि आदम मृत्यु की सज़ा के तहत आ जायेगा। उसे मृत्यु के लिए दोषी ठहराया जाएगा। निश्चित रूप से मूसा ने यह समझाने के लिए कि संसार में मृत्यु कैसे आई आदम के पाप के इस परिणाम के बारे लिखा था, लेकिन उसका उद्देश्य इस्राएलियों के अनुभव से जिन के लिए उसने इसे लिखा ज्यादा प्रत्यक्ष रूप में संबंधित था। वे मृत्यु से अच्छी तरह परिचित थे। मूसा के पाठकों ने मिस्र को छोड़कर आये पहली पीढ़ी के ज्यादातर लोगों को जंगल में मरते हुए देखा था, क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह किया था। जैसा कि मूसा ने गिनती 26:65 में लिखा:

> **क्योंकि यहोवा ने उनके विषय कहा था, "वे निश्चय जंगल में मर जाएँगे।" इसलिये यपुन्ने के पुत्र कालेब और नून के पुत्र यहोशू को छोड़, उनमें से एक भी पुरुष नहीं बचा। (गिनती 26:65)**

एक बार फिर, हम भाषा को देखते हैं "वे निश्चय मर जाएँगे" जो मूसा की व्यवस्था, और वाटिका में आदम और हव्वा की कहानी को दिखाता है।

इस संबंध में इस्राएली लोग, आदम और हव्वा की कहानी को सुनकर, जंगल में मृत्यु के अपने अनुभव को आदम और हव्वा द्वारा परमेश्वर की आज्ञा के उल्लंघन के साथ जोड़ सकते थे। वाटिका में परमेश्वर की आज्ञा के प्रति बेवफाई का परिणाम मानवता के पहले माता-पिता पर मृत्यु की सज़ा थी। और यही सज़ा इस्राएलियों पर भी थी जो मूसा के दिनों में परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति गंभीर रूप से बेवफा साबित हुए थे।

दर्द

जब हम उत्पत्ति की कहानी को पढ़ते हैं, तो यह स्पष्ट है कि आदम और हव्वा के लिए मृत्यु तुरंत नहीं आई थी। परमेश्वर ने पहले आदम और हव्वा को दर्द की पहचान वाले अस्तित्व में जीवित रखा। एक ओर, उत्पत्ति 3:16 में हम इन वचनों को पढ़ते हैं:

> **फिर स्त्री से उसने कहा, "मैं तेरी पीड़ा और तेरे गर्भवती होने के दुःख को बहुत बढ़ाऊँगा; तू पीड़ित होकर बालक उत्पन्न करेगी; और तेरी लालसा तेरे पति की ओर होगी, और वह तुझ पर प्रभुता करेगा।" (उत्पत्ति 3:16)**

दूसरी ओर, परमेश्वर ने आदम को भी दर्द-भरे जीवन की सज़ा दी। उत्पत्ति 3:17 में आदम के लिए हम इन वचनों को पढ़ते हैं:

> **इसलिये भूमि तेरे कारण शापित है। तू उसकी उपज जीवन भर दुःख के साथ खाया करेगा; (उत्पत्ति 3:17)**

वाटिका में पाप के परिणामों के बारे में मूसा जो कुछ भी कह सकता था, उन सभी में मानव दर्द पर यह दोहरा ध्यान-केंद्रण इस्राएल के लिए इस कहानी को लिखने के उसके उद्देश्य के साथ सटीक बैठता है। उन्होंने यहाँ वर्णित दर्द के प्रकारों का अनुभव किया था जब वे कनान देश से बाहर रहे थे। लेकिन मूसा ने जिस तरीके से प्रतिज्ञा किए हुए देश में जीवन का वर्णन किया है उसे सुनिए। व्यवस्थाविवरण 11:10-12 में हम इन वचनों को पढ़ते हैं:

> **देखो, जिस देश के अधिकारी होने को तुम जा रहे हो वह मिस्र देश के समान नहीं है, जहाँ से निकलकर आए हो, जहाँ तुम बीज बोते थे और हरे साग के खेत की रीति के अनुसार अपने पाँव से नालियाँ बनाकर सींचते थे; परन्तु जिस देश के अधिकारी होने को तुम पार जाने पर हो वह पहाड़ों और तराइयों का देश है, और आकाश की वर्षा के जल से सिंचता है; वह ऐसा देश है जिसकी तेरे परमेश्वर यहोवा को सुधि रहती है; और वर्ष के आदि से लेकर अन्त तक तेरे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि उस पर निरन्तर लगी रहती है। (व्यवस्थाविवरण 11:10-12)**

संक्षेप में, मूसा इस्राएल को ऐसे स्थान में ले जा रहा था जहाँ उस दर्द से जिसका अनुभव उन्होंने कनान के बाहर किया था, उन्हें राहत मिलेगी। परिणामस्वरूप, जब मूसा ने आदम और हव्वा पर आये दर्द के बारे में लिखा, तो उसने अपने इस्राएली पाठकों को बेवफाई से दूर रहने की, जिसके परिणामस्वरूप दर्द आया, और परमेश्वर के प्रति वफादार रहने के लिए बुलाहट दी, जिससे कि वे कनान को लौट सकें और परमेश्वर की आशीषों में जीवन की खुशियों का अनुभव लें सकें।

निष्कासन

आदम और हव्वा की बेवफाई का तीसरा प्रभाव 3:22 में प्रकट होता है। उत्पत्ति 3:22 के वचनों पर गौर करें:

> **फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, "मनुष्य भले बुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया है : इसलिये अब ऐसा न हो कि वह हाथ बढ़ाकर जीवन के वृक्ष का फल भी तोड़ के खा ले और सदा जीवित रहे।" (उत्पत्ति 3:22)**

यह अनुच्छेद स्पष्ट करता है कि जीवन का वृक्ष मानवता को "हमेशा के लिए जीवित रखने" में सक्षम था। दर्द और मृत्यु की समस्या का यह निर्णायक समाधान था। फिर भी परमेश्वर नहीं चाहता था कि इस समय आदम और हव्वा इसे खाएं। उन्हें वाटिका से और जीवन के वृक्ष से निष्कासित कर दिया गया था।

हमारे लिए यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि मानवता के लिए जीवन के वृक्ष तक पहुँच हमेशा के लिए वर्जित नहीं थी। शेष पवित्र-शास्त्र यह स्पष्ट कर देता है कि जो लोग परमेश्वर के प्रति वफादार हैं वे अंततः इस वृक्ष में से खाने के लायक होंगे। प्रकाशितवाक्य 2:7 में जीवन के वृक्ष के बारे में प्रेरित यूहन्ना ने जो कहा उसे सुनिए:

> **जिसके कान हों वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है। जो जय पाए, मैं उसे उस जीवन के पेड़ में से जो परमेश्वर के स्वर्गलोक में है, फल खाने को दूँगा। (प्रकाशितवाक्य 2:7)**

अब यूहन्ना ने उस अंत समय के लिए बोला जब मसीह वापस पृथ्वी पर लौटेगा। फिर भी, उसके वचनों ने समझाया है कि क्यों मूसा ने इस वृक्ष के बारे में इस्राएल को लिखा। जब आदम और हव्वा ने पाप किया था, परमेश्वर ने जीवन के वृक्ष का मार्ग अवरुद्ध कर दिया था, लेकिन मूसा के दिनों में, परमेश्वर इस्राएल के लिए उस मार्ग को खोल रहा था ताकि जब वे कनान देश को लौटें तो कम से कम जीवन की आशीष के पूर्व-स्वाद को प्राप्त करें। व्यवस्थाविवरण 30:19-20 में मूसा ने जिस तरीके से इसे लिखा उसे सुनिए:

> **मैं आज आकाश और पृथ्वी दोनों को तुम्हारे सामने इस बात की साक्षी बनाता हूँ, कि मैं ने जीवन और मरण, आशीष और शाप को तुम्हारे आगे रखा है; इसलिये तू जीवन ही को अपना ले, कि तू और तेरा वंश दोनों जीवित रहें; इसलिये अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम करो, और उसकी बात मानो, और उससे लिपटे रहो; क्योंकि तेरा**

जीवन और दीर्घ जीवन यही है, और ऐसा करने से जिस देश को यहोवा ने अब्राहम, इसहाक, और याकूब, तेरे पूर्वजों को देने की शपथ खाई थी उस देश में तू बसा रहेगा।" (व्यवस्थाविवरण 30:19-20)

यदि इस्राएली लोग परमेश्वर के प्रति वफादार रहेंगे तो उन्हें कनान देश में दीर्घ जीवन और खुशी प्राप्त करने का सुअवसर मिलेगा।

जिस तरह आदम और हव्वा ने जीवन के वृक्ष तक पहुँच को खो दिया, मूसा के दिनों में, परमेश्वर इस्राएल को वहाँ पाये जाने वाले जीवन की आशीष के आंशिक स्वाद को प्रदान कर रहा था। जीवन का यह अनुभव उस अनंत जीवन का पूर्ण मानक नहीं था जिसे हम उस रूप में जानते हैं जब मसीह वापस लौटता है। फिर भी, यह मसीह में आने वाली वस्तुओं का आंशिक पूर्व-स्वाद रहा होगा। मूसा ने इस्राएलियों को प्रतिज्ञा किए हुए देश में दीर्घ जीवन की आशीष का आनंद लेने का सुअवसर पेश किया था।

इस तरह हमने देखा कि अदन की वाटिका में आदम और हव्वा के विद्रोह की कहानी संसार में पाप की उत्पत्ति की कहानी से बहुत बढ़कर कर थी। अदन और कनान के बीच संबंधों को बनाकर, मूसा ने इस्राएली पाठकों को उनके अपने जीवनों के बारे में भी सिखाया। उन्होंने सीखा कि प्रतिज्ञा किया हुआ देश उनके लिए कितना अद्भुत हो सकता है।

अब जब कि हमने उत्पत्ति 2-3 की साहित्यिक संरचना और वास्तविक अर्थ को देख लिया है, हम तीसरा प्रश्न पूछने के लिए तैयार हैं। नया नियम आज इस अनुच्छेद को लागू करने के लिए हमें कैसे सिखाता है?

आधुनिक अनुप्रयोग

हमें यह स्पष्ट है कि मूसा ने अपने इस्राएली पाठकों को आदम और हव्वा की गलतियों से बचने, और कनान देश में प्रवेश के द्वारा स्वर्गलोक में वापस मुड़कर जाने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु इस अनुच्छेद को लिख था। लेकिन इस्राएल को दिए गए निर्देशों से आज हमारा क्या वास्ता है? साधारण शब्दों में कहे तो, जिस तरह मूसा ने आदम के कदमों को वापस करने और उलटने हेतु इस्राएल को प्रोत्साहित करने के लिए वाटिका में पाप की कहानी का प्रयोग किया था ताकि वे फिर से स्वर्गलोक में रहने के उद्धार को पा सके, वैसे ही नए नियम के लेखकों ने सिखाया है कि मसीह में उद्धार भी स्वर्गलोक की ओर एक वापसी है।

हम मसीह के राज्य के तीन चरणों पर अपने सामान्य रीति के अनुसार ध्यान-केंद्रित करने के द्वारा, मसीह के संबंध में उत्पत्ति 2-3 पर नए नियम के उपयोग की खोज करेंगे। हम लोग मसीह के पहले आगमन में राज्य के उद्घाटन के लिए इस अनुच्छेद को कैसे लागू किया गया है इसको देखने के द्वारा शुरु करेंगे, और फिर हम देखेंगे कि आज परमेश्वर के राज्य की निरंतरता में यह हमारे जीवनों के साथ कैसे बातें करता है। और आखिर में, हम देखेंगे कि जब यह अनुच्छेद मसीह के दूसरे आगमन में उसके राज्य की परिपूर्णता के बारे में सिखाता है, तो नया नियम इस अनुच्छेद से निष्कर्षों को निकालता है। आइए पहले राज्य के उद्घाटन पर विचार करते हैं।

उद्घाटन

एक तरीका है जिसमें नया नियम उस उद्धार के बारे में बताता है जिसे मसीह संसार के लिए लेकर आता है, वह पृथ्वी पर की गई उसकी सेवा में है। राज्य के उद्घाटन में मसीह ने अदन की वाटिका में जो आदम और हव्वा ने किया था, पीछे जा कर उसे पलट दिया। पृथ्वी पर अपनी सेवा में, मसीह ने परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन किया जहाँ आदम और हव्वा असफल रहे थे। पहले यह देखने के द्वारा कि पौलुस की पत्रियों में यह विषय कैसे प्रकट होता है, और दूसरा, मत्ती के सुसमाचार में यह कैसे प्रकट होता है हम नए नियम की शिक्षा के इस पहलू की जाँच करेंगे। आइए पौलुस के दृष्टिकोण के साथ शुरु करते हैं।

पौलुस

पौलुस ने संक्षेप में अपने दृष्टिकोण को रोमियों 5:14 में सारांशित किया है। वहाँ उसने लिखा:

> तौभी आदम से लेकर मूसा तक मृत्यु ने उन लोगों पर भी राज्य किया, जिन्होंने उस आदम, जो उस आनेवाले का चिह्न है, के अपराध के समान पाप न किया। (रोमियों 5:14)

ध्यान दें कि आदम उस आने वाले का एक चिह्न था। बाकी का रोमियों 5 स्पष्ट करता है कि "वह आने वाला" मसीह था। रोमियों 5:18-19 जिस तरीके से पौलुस ने इसे सारांशित किया उसे सुनिए:

> इसलिये जैसा एक अपराध सब मनुष्यों के लिये दण्ड की आज्ञा का कारण हुआ, वैसा ही एक धर्म का काम भी सब मनुष्यों के लिये जीवन के निमित्त धर्मी ठहराए जाने का कारण हुआ। क्योंकि जैसा एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे। (रोमियों 5:14)

ध्यान दें कि पौलुस ने किस तरह से इसे यहाँ बताया है। आदम का एक अपराध सब मनुष्यों के लिए दण्ड की आज्ञा का कारण हुआ, लेकिन मसीह का एक धर्म का कार्य सब मनुष्यों के लिए धर्मी ठहराये जाने का कारण हुआ। ऐसा क्यों था? क्योंकि एक आदमी, आदम, की अनाज्ञाकारिता ने हमें पापी बना दिया था। लेकिन एक आदमी, मसीह, की आज्ञाकारिता ने हमें धर्मी बनाया।

अधिकांश मसीही लोग इस शिक्षा से परिचित हैं। जिस तरह मूसा ने उत्पत्ति 2-3 में सिखाया था, आदम सिर्फ एक आदमी था, लेकिन उसके कार्यों का परिणाम उन सब के ऊपर पड़ा जो उसके साथ पहचाने जाते हैं। आदम का पाप संपूर्ण मानव जाति के लिए मृत्यु को लेकर आया क्योंकि परमेश्वर के सामने वह हमारा संघीय या वाचा वाला प्रतिनिधि था। आदम के पाप के परिणामस्वरूप, हम सभी

परमेश्वर की आशीष वाले स्वर्गलोक के बाहर और मृत्यु के अभिशाप के आधीन पैदा हुए हैं। लेकिन साथ ही, नया नियम सिखाता है कि मसीह उन सभी का संघीय या वाचा वाला प्रतिनिधि है जो उस पर विश्वास लाते हैं। फिर भी, आदम की अनाज्ञाकारिता के विपरीत, परमेश्वर के प्रति मसीह की आज्ञाकारिता उन सभी के लिए धार्मिकता और जीवन को लाती है जो उसमें गिने जाते हैं।

इस शिक्षा से हम अपने जीवनों में आदम के पाप की कहानी को लागू करने के बारे में कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण बात सीखते हैं। खोए हुए स्वर्गलोक को दोबारा पाने का एकमात्र रास्ता मसीह की धार्मिक आज्ञाकारिता के माध्यम से है। हम उद्धार के स्वर्गलोक में परमेश्वर के सामने एक व्यक्ति के रूप में अपनी स्वयं की योग्यता के बल पर प्रवेश नहीं कर सकते है। हमारे से पहले स्वर्गलोक में प्रवेश करने के लिए हमें एक बिलकुल सिद्ध प्रतिनिधि की आवश्यकता है, और मसीह वह प्रतिनिधि है। परमेश्वर की उपस्थिति में उद्धार के अनंत जीवन को हम केवल इसलिए पाते हैं क्योंकि मसीह परमेश्वर के प्रति पूर्ण रूप से आज्ञाकारी था। पृथ्वी पर अपनी सेवा में, मसीह ने स्वर्गलोक में प्रवेश के अधिकार को अर्जित किया. और केवल वे जो उस पर अपने विश्वास को लाते हैं उसके साथ प्रवेश कर सकते हैं।

आदम और मसीह के बीच आपसी-संबंध को अन्य नए नियम के लेखकों ने भी व्यक्त किया था। आइए विचार करते हैं कि मत्ती के सुसमाचार में यह विषय कैसे प्रकट होता है।

मत्ती

मत्ती 4:1-11 में मसीह की परीक्षा वाली अपनी कहानी में मत्ती ने विशेष रूप से उस तरीके पर ध्यान आकृषित किया जिसमें मसीह ने आदम के पाप को पीछे वापस किया और उसे पलटा (जिसके समानांतर अनुच्छेद लूका 4:1-13 में पाया जाता है)।

कई अलग-अलग तरीकों से, मसीह की परीक्षा वाली कहानी दोनों वाटिका में आदम और हव्वा के अनुभव, और मूसा द्वारा इस्राएलियों के लिए लाई गई उन चुनौतियों के समानांतर है जब उसने आदम और हव्वा के बारे में लिखा था। सबसे पहले, मसीह की परीक्षा का स्थान इस्राएल के साथ उसे जोड़ता है, जब इस्राएली लोग मूसा के पीछे चल रहे थे। मत्ती 4:1 के अनुसार, आत्मा यीशु को जंगल में ले गया था, ठीक उसी तरह जैसे परमेश्वर इस्राएल को जंगल में ले गया था। यह जंगल में था कि परमेश्वर ने इस्राएल की परीक्षा यह देखने के लिए की थी कि वह आज्ञाकारी होगा कि नहीं, और मसीह की भी परीक्षा जंगल में की गई थी।

दूसरा, जंगल में व्यतीत किया गया यीशु का समय अंतराल इस्राएल के अनुभव के जैसा था। जिस तरह इस्राएल जंगल में चालीस वर्ष के लिए था, उसी तरह मत्ती 4:2 के अनुसार, मसीह जंगल में चालीस दिन के लिए था।

तीसरा, मसीह की परीक्षा में भूख एक महत्वपूर्ण विशेषता थी। मत्ती 4:3 में शैतान ने पत्थर को रोटी में बदलने के लिए मसीह की परीक्षा की थी। मसीह की परीक्षा का यह आयाम जंगल में पानी और खाने के लिए इस्राएल के परखे जाने के समानांतर था।

चौथा, यीशु द्वारा पवित्र-शास्त्र का उपयोग करने के तरीकों में यीशु ने स्वयं अपने अनुभव को जंगल में इस्राएल के परखे जाने के साथ जोड़ा था। मत्ती 4:4 में यीशु ने व्यवस्थाविवरण 8:3 का हवाला दिया। मत्ती 4:7 में उसने व्यवस्थाविवरण 6:16 का हवाला दिया, और मत्ती 4:10 में उसने व्यवस्थाविवरण 6:13 का हवाला दिया। ये पुराने नियम के अनुच्छेद व्यवस्थाविवरण के उन भागों में

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

से हैं जहाँ मूसा ने जंगल में इस्राएल की परीक्षा का वर्णन किया था। इन पदों का हवाला देने के द्वारा, यीशु ने प्रत्यक्ष रूप में परीक्षा के अपने अनुभव को इस्राएल देश के परखे जाने के साथ जोड़ा था।

इस तरह हम देखते हैं कि यीशु की परीक्षा वाली मत्ती की कहानी उस संदेश के साथ जुड़ती है जिसे मूसा ने मूल रूप से उत्पत्ति 2-3 के माध्यम से इस्राएल को दिया था। अपने सक्रिय आज्ञाकारिता के द्वारा, यीशु वहाँ सफल हुआ जहाँ दोनों आदम और इस्राएल विफल रहे थे। मसीह परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति वफादार था। इसी कारण से यीशु ने उन प्रसिद्ध वचनों को बोला था जो लूका 23:43 में पाये जाते हैं। जिस तरह से कनान देश में प्रवेश करने के लिए इस्राएल को तैयार करने हेतु उन्होंने जंगल में अपनी परीक्षा का सामना किया था, उसी तरह लूका 23:43 लिखता है कि क्रूस पर यीशु ने पश्चाताप करने वाले चोर से ये वचन बोले थे:

> **उसने उससे कहा, "मैं तुझ से सच कहता हूँ कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।" (लूका 23:43)**

मसीह का इनाम उसकी धार्मिकता के लिए स्वर्गलोक में अनंत जीवन था।

इस तरह हम देखते हैं कि नया नियम आदम और हव्वा की कहानी, और साथ में जंगल में इस्राएल की परीक्षा को भी मसीह की सांसारिक सेवकाई में राज्य के उद्घाटन के साथ जोड़ता है। मसीह वह अंतिम आदम था जो वहाँ सफल हुआ जहाँ आदम विफल हुआ था। इसके अलावा, इस्राएल की विफलता को पलटने के द्वारा मसीह जंगल में परीक्षा पर विजय पाता है। और इस कारण से, उसने अनंत स्वर्गलोक में प्रवेश किया।

अब जब कि हमने देख लिया है कि किस तरह से नया नियम, वाटिका में आदम और हव्वा की मूसा वाली कहानी को मसीह के पहले आगमन के साथ जोड़ता है, हमें अपने दूसरे पहलू पर आना चाहिए। किस तरह से नया नियम इन सिद्धांतों को राज्य की निरंतरता के लिए लागू करता है, यानी वह समय जिसमें अब हम रहते हैं?

निरंतरता

इस संबंध में नए नियम के कई अनुच्छेद सामने आते हैं। लेकिन हम केवल दो को ही देखेंगे: पहला, उत्पत्ति के इन अध्यायों पर पौलुस का ध्यान-केंद्रण, और दूसरा, जिस तरह से याकूब ने इन बातों को लिखा।

पौलुस

आइए सबसे पहले 2 कुरिन्थियों 11:3 में पौलुस के वचनों को देखते हैं:

परन्तु मैं डरता हूँ कि जैसे साँप ने अपनी चतुराई से हव्वा को बहकाया, वैसे ही तुम्हारे मन उस सीधाई और पवित्रता से जो मसीह के साथ होनी चाहिए, कहीं भ्रष्ट न किए जाएँ। (2 कुरिन्थियों 11:3)

जैसे-जैसे पौलुस इस अध्याय में आगे बढ़ता है, तो उसने बताया कि वह बहुत चिंतित था कि कुरिन्थियों की कलीसिया अन्य सुसमाचार को मानने लगेगी। यहाँ हम देखते हैं कि सबसे बुरे प्रकार की बेवफाई के खिलाफ चेतावनी देने के लिए पौलुस ने हव्वा के नकारात्मक उदाहरण की अपील दी---यानी मसीह के सच्चे सुसमाचार को त्यागना। जिस तरह मूसा ने हव्वा की परीक्षा वाली कहानी का उपयोग इस्राएल को ईमानदारी के साथ प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर जाने हेतु चेतावनी देने के लिए किया था, उसी तरह से पौलुस ने अपने दिनों में मसीह के सभी अनुयायियों से अपेक्षित बुनियादी वफादारी के बारे में विश्वासियों को चेतावनी देने के लिए इसी कहानी का उपयोग किया था। राज्य की निरंतरता के दौरान, दृश्यमान कलीसिया में कई लोग सुसमाचार की मूलभूत सच्चाईयों को त्यागने के खतरे का सामना करते हैं। इस आक्रामक रीति से विश्वास के त्यागे जाने के खिलाफ कलीसिया को सावधान रहना चाहिए क्योंकि इसके परिणाम उतने ही भयानक हैं जितने कि वे आदम और हव्वा के लिए थे।

याकूब

याकूब ने जब मसीही लोगों के जीवन में परीक्षा और परख की भूमिका का वर्णन किया तो वह पौलुस जैसे ही दृष्टिकोण को लेता है। याकूब 1:12-15 में हम इन वचनों को पढ़ते हैं:

धन्य है वह मनुष्य जो परीक्षा में स्थिर रहता है, क्योंकि वह खरा निकलकर जीवन का वह मुकुट पाएगा जिसकी प्रतिज्ञा प्रभु ने अपने प्रेम करनेवालों से की है। ...परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा से खिंचकर और फँसकर परीक्षा में पड़ता है। फिर अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जनती है और पाप जब बढ़ जाता है तो मृत्यु को उत्पन्न करता है। (याकूब 1:12-15)

यह स्पष्ट है कि याकूब ने उत्पत्ति 2-3 की ओर संकेत किया था। 1:14 में उसने मनुष्य की "अभिलाषा" पर, पाप की लालसा के पीछे वाली शक्ति के रूप में ध्यान-केंद्रित किया, और यह भले और बुरे के ज्ञान वाले वृक्ष के लिए हव्वा की अभिलाषा थी जिसके कारण उसने पाप किया।

दूसरा, याकूब ने समझाया कि जो परीक्षा में खरा निकलेगा वह "जीवन का मुकुट पाएगा।" इसके विपरीत पाप का परिणाम यह है कि यह "मृत्यु को जन्म देता है।" यहाँ जीवन और मृत्यु के बीच जो विषमता है वह आदम और हव्वा की कहानी में जीवन और मृत्यु के बीच विषमता के जैसी है।

जिस तरह मूसा ने आदम और हव्वा की परीक्षा के बारे में अपील करने के द्वारा जंगल में परीक्षा के दौरान इस्राएल में विश्वासयोग्यता को प्रोत्साहित किया, उसी तरह से पौलुस और याकूब ने राज्य की निरंतरता में परीक्षाओं के दौरान हमें वफादारी के लिए प्रोत्साहित किया। मसीही जीवन के दौरान परीक्षाएं हमारे सच्चे चरित्र को उजागर करते हैं और हमें अनंत जीवन के लिए तैयार करते हैं।

परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा, मसीह के प्रति वफादार बने रहने के लिए हम जो भी कर सकते हैं वह हमें करना चाहिए ताकि स्वर्गलोक में हमें अनंत जीवन के उपहार से सम्मानित किया जा सके।

यह देखने के बाद कि नया नियम किस तरह से वाटिका में आदम और हव्वा की कहानी को राज्य के उद्घाटन और निरंतरता के लिए लागू करता है, हमें अब अपने ध्यान को अंतिम चरण पर मोड़ना चाहिए, यानी दूसरे आगमन पर मसीह में उद्धार की परिपूर्णता।

परिपूर्णता

यह विषय भी नए नियम में कई स्थानों पर प्रकट होता है, लेकिन हम केवल दो अनुच्छेदों को ही देखेंगे: एक रोमियों में और दूसरा प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में।

रोमियों

पहले स्थान में, उस तरीके को सुनें जिसमें पौलुस ने जब वह अपनी पत्री को समाप्त कर रहा था तो रोम में विश्वासियों को आशा दी। रोमियों16:20 में उसने इन वचनों को लिखा:

> **शान्ति का परमेश्वर शैतान को तुम्हारे पाँवों से शीघ्र कुचलवा देगा। हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम पर होता रहे। (रोमियों 16:20)**

इन वचनों में, पौलुस ने रोम के मसीहों को मसीह के दूसरे आगमन में उनकी महान आशा की याद दिलाई। लेकिन उसने उत्पत्ति 3 में उद्धार की प्रतिज्ञा का वापस हवाला देते हुए ऐसा किया।

जैसा कि हमने इस पाठ में पहले देखा है, उत्पत्ति 3:15 में परमेश्वर ने सर्प से कहा था कि एक दिन हव्वा का बीज, मानव जाति, सर्प के बीज के सिर को कुचलेगा। इस पद में पौलुस ने कहा कि जब मसीह वापस आयेगा तो शैतान मसीही लोगों के पाँवों तले कुचला जाएगा। मसीह स्वयं शैतान को और हमारे शक्तिशाली दुश्मन, मौत को नष्ट कर देगा। तब हम लोग मसीह के साथ विजय और महिमा में राज करेंगे।

प्रकाशितवाक्य

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक नए नियम में ऐसा एक और स्थान है जहाँ उत्पत्ति 2-3 के विषय राज्य की परिपूर्णता से संबंधित हैं। यूहन्ना ने इस पुस्तक में कई मौकों पर जीवन के वृक्ष का हवाला दिया। प्रकाशितवाक्य 2:7 में यूहन्ना जिस तरीके से इस बात को कहता है उसे सुनिए:

> **जिसके कान हों वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है। जो जय पाए, मैं उसे उस जीवन के पेड़ में से जो परमेश्वर के स्वर्गलोक में है, फल खाने को दूँगा। (प्रकाशितवाक्य 2:7)**

यहाँ पर उत्पत्ति 3 के लिए संकेत स्पष्ट है। हम जानते हैं कि आदम और हव्वा को जीवन के वृक्ष से खाने से रोकने के लिए अदन की वाटिका से ठीक इसीलिए निष्कासित कर दिया गया था। फिर भी, जब मसीह वापस आता है, तो परमेश्वर अपने लोगों को जीवन के वृक्ष से खाने का अधिकार देगा। इस पर भी ध्यान दें कि यह वृक्ष कहाँ स्थित है। यूहन्ना ने स्पष्ट रूप से कहा कि यह "परमेश्वर के स्वर्गलोक में" है। जिस तरह मूसा ने इस्राएल को कनान देश में प्रवेश करने के लिए बुलाहट दी क्योंकि वहाँ लम्बा जीवन पाया जा सकता था, वैसे ही मसीही लोगों के पास उससे भी बढ़कर, पूर्ण रूप से पुनर्स्थापित स्वर्गलोक में प्रवेश करने की अपनी आशा है।

तीसरे स्थान पर, उन लोगों की पहचान में जो उस वृक्ष में से खायेंगे हम उत्पत्ति के साथ एक और संबंध देखते हैं। यूहन्ना ने कहा कि "जो जय पायेगा उसे" अधिकार दिया जायेगा। जिस तरह मूसा ने इस्राएल को परमेश्वर के प्रति वफादार बनने के लिए प्रोत्साहित किया, उसी तरह यूहन्ना ने समझाया कि केवल वह जो वफादार रहने के द्वारा पाप पर विजय पाता है जीवन के वृक्ष से खाने पायेगा।

अंत में, हमें प्रकाशितवाक्य 22:1-2 को देखना चाहिए। जब यूहन्ना ने आने वाले नए संसार की ओर देखा, तो जो उसने देखा वह यह है:

> **फिर उसने मुझे बिल्लौर की सी झलकती हुई, जीवन के जल की नदी दिखाई, जो परमेश्वर और मेम्ने के सिंहासन से निकलकर उस नगर की सड़क के बीचों बीच बहती थी। नदी के इस पार और उस पार जीवन का वृक्ष था; उसमें बारह प्रकार के फल लगते थे, और वह हर महीने फलता था; और उस वृक्ष के पत्तों से जाति-जाति के लोग चंगे होते थे। (प्रकाशितवाक्य 22:1-2)**

नए नियम का दृष्टिकोण साफ है। जब मसीह अपने राज्य की परिपूर्णता में वापस लौटता है, तो वे जो मसीह पर विश्वास करते हैं अदन के स्वर्गलोक में प्रवेश करेंगे। शैतान हमारे पाँवों तले कुचला जाएगा और हम जीवन के वृक्ष में से खायेंगे और परमेश्वर की नई सृष्टि में हमेशा के लिए रहेंगे।

निष्कर्ष

इस पाठ में हमने देखा कि मूसा ने जब इस्राएली लोग प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर जा रहे थे तो उनकी मदद करने के लिए वाटिका में आदम और हव्वा के बारे में लिखा। उसने अदन की वाटिका में घटनाओं को पीछे वापस करने और उलटने के लिए देश को बुलाहट दी थी। कई मायनों में, इस अनुच्छेद का संदेश आज हमारे लिए भी ठीक वैसा ही है। प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर आगे बढ़ने के लिए इस्राएल को दी गई मूसा की बुलाहट को सुनने के द्वारा, हम देख सकते हैं कि किस तरह हमें भी आदम और हव्वा के कदमों को पीछे वापस करना और उलटना चाहिए। मसीह पर भरोसा एवं उसके प्रति वफादार बने रहने के द्वारा, हम खोए और पाए हुए, स्वर्गलोक के उद्धार को खोज पायेंगे।

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

---

Dr. Richard L. Pratt, Jr. (Host) is Co-Founder and President of Third Millennium Ministries. He served as Professor of Old Testament at Reformed Theological Seminary for more than 20 years and was chair of the Old Testament department. An ordained minister, Dr. Pratt travels extensively to evangelize and teach. He studied at Westminster Theological Seminary, received his M.Div. from Union Theological Seminary, and earned his Th.D. in Old Testament Studies from Harvard University. Dr. Pratt is the general editor of the NIV Spirit of the Reformation Study Bible and a translator for the New Living Translation. He has also authored numerous articles and books, including *Pray with Your Eyes Open*, *Every Thought Captive*, *Designed for Dignity*, *He Gave Us Stories*, *Commentary on 1 & 2 Chronicles* and *Commentary on 1 & 2 Corinthians*.